

नैदानिक मूल्यांकन (Clinical Assessment) एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से एक मनोवैज्ञानिक किसी व्यक्ति के व्यवहार, व्यक्तित्व, संज्ञानात्मक क्षमताओं और मानसिक स्वास्थ्य का व्यवस्थित रूप से अध्ययन करता है। इसका मुख्य उद्देश्य व्यक्ति की समस्याओं को समझना और उनके समाधान के लिए सही दिशा तय करना है।

1. नैदानिक मूल्यांकन की प्रकृति (Nature of Clinical Assessment)

नैदानिक मूल्यांकन केवल एक टेस्ट नहीं है, बल्कि यह एक **बहु-आयामी प्रक्रिया** (Multi-dimensional Process) है:

- व्यवस्थित और वैज्ञानिक:** यह एक सुनियोजित ढंग से की जाने वाली प्रक्रिया है जिसमें मानक उपकरणों (Standardized tools) का उपयोग होता है।
- निरंतरता:** यह केवल शुरुआत में नहीं किया जाता, बल्कि उपचार के दौरान भी यह देखने के लिए किया जाता है कि मरीज में कितना सुधार हो रहा है।
- व्यक्तिगत:** हर व्यक्ति की परिस्थितियाँ अलग होती हैं, इसलिए मूल्यांकन की प्रकृति भी व्यक्ति-विशिष्ट होती है।
- बहु-स्त्रोत (Multi-source):** इसमें जानकारी केवल मरीज से ही नहीं, बल्कि उसके परिवार, स्कूल/कार्यस्थल और पिछले मेडिकल रिकॉर्ड्स से भी ली जाती है।

2. नैदानिक मूल्यांकन का उद्देश्य (Purpose of Clinical Assessment)

मूल्यांकन के मुख्य उद्देश्यों को निम्नलिखित बिंदुओं में समझा जा सकता है:

(A) निदान (Diagnosis)

सबसे प्रमुख उद्देश्य यह पता लगाना है कि व्यक्ति को वास्तव में क्या समस्या है। क्या यह अवसाद (Depression) है, चिंता (Anxiety) है, या कोई व्यक्तित्व विकार (Personality Disorder)? इसके लिए मनोवैज्ञानिक **DSM-5** या **ICD-11** जैसे अंतरराष्ट्रीय मानकों का उपयोग करते हैं।

(B) उपचार योजना तैयार करना (Treatment Planning)

एक बार समस्या का पता चल जाने के बाद, मूल्यांकन यह तय करने में मदद करता है कि कौन सी थेरेपी (जैसे CBT, प्ले थेरेपी आदि) सबसे प्रभावी होगी। यह एक 'रोडमैप' की तरह काम करता है।

(C) गंभीरता का आकलन (Severity Assessment)

मूल्यांकन यह स्पष्ट करता है कि समस्या कितनी गंभीर है। क्या मरीज को अस्पताल में भर्ती करने की जरूरत है या केवल साप्ताहिक सत्र (Sessions) से काम चल जाएगा?

(D) प्रोग्रेस की निगरानी (Monitoring Progress)

इलाज के कुछ हफ्तों बाद, यह देखने के लिए फिर से मूल्यांकन किया जाता है कि उपचार का कितना असर हो रहा है। यदि सुधार नहीं हो रहा है, तो उपचार की दिशा बदली जा सकती है।

(E) जोखिम का आकलन (Risk Assessment)

यह बहुत महत्वपूर्ण है, विशेष रूप से यह जाँचने के लिए कि क्या व्यक्ति स्वयं को या दूसरों को नुकसान पहुँचाने (जैसे आत्महत्या के विचार) के जोखिम में तो नहीं है।

निष्कर्ष

नैदानिक मूल्यांकन का अंतिम उद्देश्य व्यक्ति के जीवन की गुणवत्ता (Quality of Life) में सुधार करना है। यह अंधेरे में तीर चलाने के बजाय वैज्ञानिक प्रमाणों के आधार पर मानसिक स्वास्थ्य सहायता प्रदान करने की प्रक्रिया है।